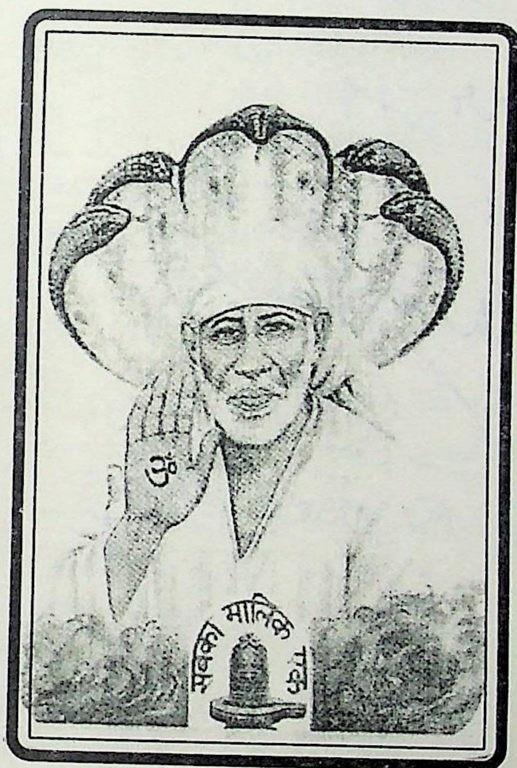
साईं चरणों में



डॉ. 'रोशन' सराफ



साईं चरणों में



डॉ॰ 'रोशन' सराफ

14th April 2012

Jammu

To

Dear Sister

Dulari ji

with respects

Dr. Roshan Saraf

पुस्तक का नाम : **'साईं चरणों में'**
लेखक : डॉ 'रोशन' सराफ
अक्षर संयोजन : आई आई एल एस,
डी.टी.पी सेंटर, 471-A, Sec-2 मुठ्ठी, जम्मू।
रिंकू कौल # 94191-36369
प्रकाशन वर्ष : 2011 ई॰
प्रथम संस्करण : 500 प्रतियाँ
मूल्य : 100/- रुपये
मुखपृष्ठ : सूर्ज सराफ और गोलडी सराफ

मुद्रक : नवर्दुगा प्रिटिगं प्रेस पटोली जम्मू
Mob.: 9419124691

पुस्तक प्राप्ति का पता—
1. डॉ रोशन सराफ,
सूर्या डुपलैक्स, अर्पाटमेंटस, त्रुकुटानगर, जम्मू।
मोबयिल : 9419142652
2. विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय,
बोहडी पट्टा, जम्मू 180002
3. कश्मीर सहायक समती, त्रुकुटानगर, जम्मू।

विषय सूची

'साईं चरणों में' - एक अवलोकन

श्रद्धा एवं प्रेम के संयोग से भक्ति का भाव मन में संचरित होता है। भक्ति एक ऐसा प्रेम का प्याला है जिसमें घुला विष भी अमृत हो जाता है। प्रेम दीवानी मीरा के लिए तो विष का प्याला भी अमृत बन गया था। अबोध भक्त धना जाट के आमरण अनशन की दृढ़ प्रतिज्ञा के समक्ष तो भगवान को पत्थर में से प्रकट होने के लिए विवश होना पड़ा था। कभी प्रह्लाद के बालपन की भक्ति के वश में आकर ईश्वर को नरसिंह अवतार के रूप में खम्भे में से अवतरित होना पड़ा था। ईश्वर तो भक्तों के वश में है। जहाँ भी मनसा—वाचा—कर्मणा उनके नाम का स्मरण होता है, वह वहाँ सदैव विद्यमान रहते हैं। ईश्वर तो सृष्टि के कण—कण में व्याप्त है, उन्हें देखने के लिए उस मन की आंखें चाहिए, जो निर्मल—स्वच्छ हो, विषय वासनाओं और छलकपट से रहित हो, तभी तो संत कबीरदास हमें हाथों का मनका छोड़कर मन के मनके को फेरने के लिए प्रेरित करते हैं, क्योंकि बाह्य आडम्बर पूर्ण भक्ति मनुष्य को लक्ष्य तक नहीं पहुंचाती वरन् दिग्भ्रमित करती हैं। कबीर की वाणी में:

माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

शुद्ध मन से की भक्ति ही भक्त को सद्मार्ग की ओर ले जाती है, जिसके फलस्वरूप उसे अपने ही भीतर परमात्मा के दर्शन होते हैं।

व्यवसाय से चिकित्सक और हृदय से कवि के रूप में जनसाधारण में विख्यात डॉ. रोशन सराफ भी ऐसे ही भक्त हैं जिनपर श्री साई बाबा और भगवान गोपीनाथ की असीम अनुकम्पा है। अपने आराध्य देव के प्रति अपार श्रद्धा और असीम प्रेम लिए इस भक्त कवि ने साई बाबा के चरणों में 36 भजन लीलाएँ समर्पित की हैं, जो इस सद्य प्रकाशित पुस्तिका 'साई चरणों में' संकलित हैं। पुस्तिका के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है, कि कवि को अपने आराध्य के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्था है, साई के चरणों की अमृत धारा में डुबकियाँ लगाने की तीव्र उत्कंठा है, साई का नाम स्मरण कर पार उतर जाने की अभिलाषा है, अपनी चित्तवृत्तियों को ब्राह्य आडम्बरों से हटाकर अंतर्मुखी करने का सद्प्रयास है:

चित्त का दर्पण मैला कुचैला
राक्षस रावण विचार हठीला
राम—राम का अनुग्रह पा वासना सुधारूँ
तर जाऊँ हो सागर पार

* * *

काशी, मथुरा, शिरडी, वृन्दावन
हर घर में तू हर—हर शिव निरंजन
साई—साई पुकारूँ भक्त बन जाऊँ
तर जाऊँ हो सागर पार।

डॉ. सराफ की भक्ति उस जलधारा की भांति गतिशील है जो यह नहीं जानती कि सीमाएँ क्या होती हैं, ऊबड़—खाबड़ मार्गों से कैसे बहना है, कंकड़, विशाल शिलाओं से टकरा कर क्या हो सकता है, वह असीमता

का चोला पहन कर बहना ही अपना कर्म समझती है। 'साईं चरणों में' की भजन—लीलाएँ असीमता का चोला पहने हुए हैं जहाँ व्यक्ति को धर्म, जाति, पंथ एवं सम्प्रदाय की नज़र से नहीं, साईं बाबा के भक्त के रूप में जाना जाता है। जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर, साम्प्रदायिक सौहार्द के दृष्टिकोण से ही हम इन भजन—लीलाओं एवं आरती का रसास्वादन कर सकते हैं, तभी हम साईं बाबा के कृपा पात्र भी बन सकते हैं। दो उदाहरण द्रष्ट्व्य है:—

ओम् नमो भगवते साईं नाथाय, नारायणाय नमो नमः।
राम स्वरूपाय श्री कृष्णाय, नारायणाय नमो नमः।।
काशी, मथुरा जिसके आंगन में, प्रांगण में द्वारिका माई।
पावन धाम शिरडी कहलाये, नारायणाय नमो नमः।।

* * *

दूर से आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में
इक शमा जलाये, हज़ूर के हज़ूर में
तेरी बारगाह में हैं हज़ारों सजदे में
सर झुका के आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में

कहीं भक्त श्री राम एवं श्री कृष्ण के रूप में साईं की आरती उतारते हैं तो कहीं भक्त उन्हें हज़ूर कह कर उनकी बारगाह में सजदे करते हैं। सब का हित चाहने वाले, समद्रष्टा, सम्भाव रखने वाले साईं बाबा जगत् कल्याण हेतु मृत्युलोक में शिरडी गांव में नीम के वृक्ष के नीचे बालक रूप में प्रकट हुए। उन्होंने स्वयं कहा है कि जो भी व्यक्ति सच्चे मन से मेरी शरण में आएगा, मैं उसके सभी कार्य पूर्ण करूंगा। जो मुझे जिस रूप में मानेगा, मैं उसे उसी रूप में दर्शन दूंगा।

साई के भवन में राम और रहीम में किंचित मात्र भी भेद नहीं है। इसीलिए साई को पूजने वाले हर धर्म मज़हब, सम्प्रदाय के लोग हैं। हिन्दू उन्हें श्रीराम, कृष्ण एवं शिव की मूर्ति में पाकर भजते हैं तो मुस्लिम अल्लाह एवं रहीम के रूप में सजदा करते हैं:—

जिसके माथे नाम अल्लाह हो,
मन में राम होठों पे कृष्ण हो
साईं कीर्त्तन कर, तन मन अर्पण साईं चरणन।

डॉ. सराफ की भांति करोडों लोग साई की भक्ति की धूनी मन में रमाए हुए हैं। जब उन्हें कोई हिन्दू कहता था, तो वे कुरान—ए—शरीफ की आयते सुनाते थे और जब कोई मुसलमान कहकर अभिहीत करता था तो वे वेद पुराण उपनिषद्ों के श्लोक सुनाकर सब को दंग कर देते थे। वास्तव में हर समुदाय को एक सूत्र में पिरोने का उनका अभीष्ट था। वे व्यक्ति को राम और रहीम के भेद से अभेद की स्थिति तक पहुंचाने की चेष्टा करते थे। उनका यह संदेश तो जगज़ाहिर है— *'सब का मालिक एक है।'*

आपके सदके हज़ार जान,
यह आस्तान मेरा दीन—ओ—ईमान।
न हिन्दू न मुसलमान, न ईसाई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

* * *

लब पे आप के अल्लाह की अज़ान
तान मुरली की सीने में
कर दे करम हम पे या इलाही
आप की खुदाई का जग शैदाई

शिव के शंख गूंज में आप,

आप निरंजन दुख भंजन।

साईं बाबा ने अपने भक्तों के कष्ट निवारण के लिए कई चमत्कार किए। वह भक्तों का कष्ट स्वयं पर लेकर भक्तों के घावों पर स्नेह लेप लगाते थे। श्रद्धा और सबूरी (सहन शक्ति) उनका मूल मंत्र है:—

ऐसे गुरु के चरणों में, क्यों न मन—प्राण निवार दूँ।

श्रद्धा और सबूरी जिसके मन में,

'रोशन' होके जीवन संवार दूँ।

वह कभी राम तो कभी श्याम,

पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।

'साईं चरणों में' की भजन—लीलाओं में साईं दर्शन की पिपासा है, जोगन बनकर लगन लगाने की आस है। कण—कण में बाबा के दर्शन की अनवरत साधना है। साईं बाबा भक्तकवि की दिल की धड़कन है, दर्द की दवा उनके बारगाह की भस्म भभूती हैं, साईं चरणों में तन—मन अर्पण करने की उत्कंठा है—

साईं भजन कर, तन—मन अर्पण साईं चरणन

साईं चिन्तन कर, तन—मन अर्पण साईं चरणन

* * *

भस्म भभूती, वह राख दरबार की

दुआ बारगाह की वहीं दवा दर्द की

साईं जागरण कर, तन—मन अर्पण साईं चरणन।

'साईं चरणों में' की भाषा प्रत्येक धर्म, पंथ की भाषा का मिश्रण है। इसी कारण हिन्दी—हिन्दुस्तानी के साथ उर्दू—फारसी के शब्दों का भी इन भजनों में समावेश है।

यह पुस्तिका विविध भाषाओं की एकता की प्रतीक है। यह साई के भक्तों की भाषा है।

66 वर्षीय डॉ. रोशन सराफ हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी तथा अंग्रेज़ी भाषा में सृजनारत हैं। इनकी कश्मीरी में 'ग्वरु पूज़ा', 'लोलु ऑश' और अंग्रेज़ी में Rhythmic verses पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सद्य प्रकाशित पुस्तक के अतिरिक्त वर्तमान में डॉ. सराफ की हिन्दी, कश्मीरी और अंग्रेज़ी में 6 पुस्तकें 'अमृत वर्षा' (हिन्दी), 'मॉज', 'ग्वरु पादन तल', 'अस खंगाल' (कश्मीरी), Images and Incarnations, Emotions (अंग्रेज़ी) शीघ्र प्रकाशित हो रही हैं। इनकी रचनाएँ शुद्ध विद्या, प्रकाश, नाद, कोशुर समाचार, वितस्ता, पंचतरणी, आलव, मिलचार जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं तथा अंग्रेज़ी समाचार पत्र डेली एक्सेलशियर में भी इन की रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं।

डॉ. सराफ केवल भजन—लीलाओं को रचते ही नहीं हैं बल्कि उन्हें स्वरों में सजाकर गाते भी हैं। भक्त की भक्ति ऐसी ही बनी रहे और पराकाष्ठा तक पहुंचे, ऐसी हम कामना करते हैं। साई चरणों के कृपा पात्र बनने के लिए हम मन से धना जाट की तरह विश्वास बनाए रखें। बाबा अपने भक्तों को अपने श्रीचरणों की अनन्य भक्ति दें, सदा उनका तेजस्वी, मनोहर स्वरूप आंखों में बसा रहे और हर व्यक्ति में उनके दर्शन हों, इसी आशा और विश्वास के साथ—

प्रो. (डॉ.) महाराजकृष्ण भरत
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजौरी।

कुछ शब्द अपने बारे में

गुलाशन से निकल कर जब किसी ने मुझ से पूछा कि यह कैसी 'मिज़ाज की तबदीली, कहाँ एक डाक्टर, एक खिलाडी, एक तैराक, एक कोह पैमा और एक मुसविर और कहाँ कलमकार।' एक मीठी से हस्सी होंठू पर लिये में ने जवाब में कहा, 'माहोल की तब्दीली, फज़ा की शिदत और उमर के डलते हुये साये'। नब्ज़ टटोलते टटोलते में इन्सानी ज़िहनू को बी टटोलता रहा। दिल की दडकनू की तशखीस करते करते दिलूं की कस्क, टीस और नज़ाकत को समझने लगा, महसूस करने लगा और बर एक कवि, एक अदीब बन गया।

दरअसल 1962 में 'एस पी कालेज' में 'एफ एस सी' का विद्यार्थी होने पर मैं ने अपनी दो नावल 'आतिश' और 'पायल' हिंदुसतानी में लिखीं, लैकिन खेल और खेल की मसरूफियात की वजह से उन का तकमील न होसका। उसी दौरान मैंने अंगरेज़ी में कवितायें लिखनी शरू की जिसका इंकशाफ मैं ने अपनी अंगरेज़ी किताब "Rhythmic Verses" में किया है, लेकिन वहीं खेल की मसरूफियात और फिर मयडिकल की पडाई की वजह से इतना समय ही न मिला कि में लिखलने के सिलसिले को मुकमिल करके अपने कल्म के ज़ोर और ख्यालूं की वुसत को आप के सामने पैश करता। प्रवासी होने पर जहाँ हम कश्मीरी पंड़ित अपना घरबार, अपनी जन्म भूमी और रिशयूं मुन्यूं के आसथा की सुगंध को छोड़ वनवास में आगये, वहाँ मुझ

जैसे कितने ही अपने कल्म की नोक को कोरे कागज़ पर तैज़ करगये। शायद इसलिये कि हम पडे लिखे होने पर बी काम–व–काज से महरूम रहे और सोंच–व–फिकर से दोचार होकर ख्यालूं के भवंडर में गुम हुये। एक अदीब, एक कवि किसी कालेज में सीख कर नहीं आता। शायरी एक ऐसी चिंगारी है जो एक कल्मकार के ज़िहन में कुदरत की देन है और जो मुनासिब समय पर एक उबलता हुआ लावा बनकर उगल आता है। यह एक ठोठ मारती हुवा सागर की लहरू का वह तूफान है जो फर्श से उठकर उर्श की दहलीज़ तक अपने मोजू का अहसास करा के स्वर्ग के दरवाज़े पर दसतक देता है और उस पैदा शुदा आवाज़, उस झंकार से कई शब्दु का जन्म होता है और वही शब्द सर्गम के तारू को छेड कर गीत, गज़ल और नज़्म बन जाती है। 'सोंच–व–फिकर' की दुन्याँ में घुम होकर एक कवि 'मालिक' के शर्ण में आकर अपने आंसवू की माला पिरोकर प्रभु के चर्णें में शब्दु के फूल बैंट चडा देता है। यह एक इंसानी फितरत है जो एक कल्मकार अपनी कविता का पहला पन्ना मालिक के हज़ूर में पैश करता है। यहीं मैं ने बी किया जब मैं ने कश्मीरी, हिन्दुसतानी और अंगरेज़ी ज़बान में अपना पहली अकीदत 'भगवान जी' के नज़र किया।

मैं ने अबी तक तीन किताबें लिखी, 2001 में कश्मीरी में भगवान गोपीनाथ पर 'ग्वर पूज़ा', कश्मीरी में ही 2004 में 'लोल आश' और 2008 में Rhythmic Verses अंगरेज़ी में (जो मार्च 2008 में रिलीज़) शाया की और अंकरीब ही कई और किताबूं का विमोचन करने वाला हूँ।

मैं ने अपने ख्यालूँ की 'रवानी को कूज़े' में समेटने की कोशिश की है। नफसियाती और धार्मिक सुगंध से दिमाग को महकाने की कोशिश की है। झीलूं में लहरू की उमंग—रंग रंगीले परिंदू की मीठी बोली और हुसन की अलहड जवानी के घुंघुरूवू की आवाज़ से अपने शब्दु को सात सुरू में उतार कर सब के सामने पैश करने की कोशिश की और यही आरिज़ू है कि ज़िन्दगी की आखरी सांस तक अपने गीतों और आवाज़ से सामयीन का दिल जीत सकूं।

'जिसकी उन्गलियाँ टटोलती रही नब्ज़ साला साल
वह अब लिख रहा है नुसख्य दीवानगी'

'साई चर्णों में' की किताब गीतों का गुल्दसता है जो में ने अपने ख्यालूं के गुलशन से चुन—चुन कर साई चर्णों में बैंट किया है। मेरी हिंदी या यूँ कहे कि हन्दोसतानी में पहली कोशिश है जो में ने समेट कर गीत माला बना कर संसार के सभी भक्तों को साई महाराज के प्रसाद के तोर पर खिलाना और पिलाना चाहता हूँ। भकतूं का मेरा यह उपहार पसंद आयेगा, इस का मुझे पूर्ण विशवास है। कोतहियाँ तो होंगी ही, परंतु मेरी प्रार्थना है कि इन गीतु की सुगंद से साई के ध्यान में मदहोश होकर इस भक्ति रस चुरा लें और साई मय होजाये।

डॉ॰ 'रोश' सराफ
(रोशि रोशि)

आदि आराधना

हे गजानन ईश नन्दन ईश नन्दन,
शरण आपके चरणन में।
हे विनायक गौरी नन्दन गौरी नन्दन।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

सूर्य में आपकी लाली,
सुबह की थाली में केसर चन्दन।
कण—कण करे आपका अभिनन्दन।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

मैं शिव प्रेम के फूल लेकर,
फैला कर दामन बारगाह में।
ध्यान में बैठ कर शत शत नमन।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

श्रद्धा के इन्द्र—धनुषी रंग,
अंग अंग में भक्ति की उमंग।
आस्था के सुमन करूँ अर्पण।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

आपके नाम से दिन उजले,
सुलझें उलझे कर्म दोष।
होंठों पे जग के आपका चिन्तन।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

श्री गणेश सर्वसिद्धि योग,
भोग आपका मिटाये रोग।
एक दन्त स्मरण से दुःख निवारण।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

आगाज़ आरती का न कोई पूजा,
दूजा नाम आपके सिवा।
आप त्रिलोक के आदि आराधन,
शरण आपके चरणन में।।०।।

सारी सृष्टि के आप विभूषण,
'रोशन' आप है ज्ञानेश्वर।
शिव, शक्ति के ज्ञाननन्दन।।
शरण आपके चरणन में।।०।।

सावन–भादों की शीतल लहर

अर्श–ओ–फर्श पर एक ही नाम,
धाम जिसका शिर्डी में।
वह कभी राम तो कभी शाम,
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।।

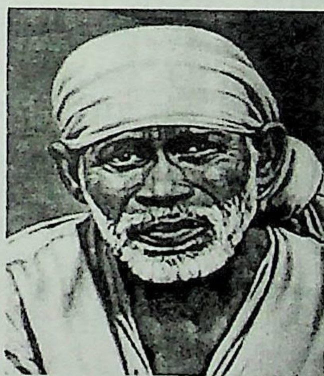
वह साधु फटे पुराने में,
जानी अनजानी राहों में।
प्रेम का झोला हाथों में,
एक अगोचर मीठी बातों में।।
वह कभी राम तो कभी शाम,
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।।०।।

वह सावन भादों की शीतल लहर,
मेहर प्रेम की बरसाये।
पावन नाम की सुगंध शाम–ओ–सहर,
कहर लोभ और मोह का मिटाये।
वह कभी राम तो कभी शाम,
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।।०।।

वह सुबह की निर्मल लाली में,
बागों की मस्त हरियाली में।
वह महकती बेला डाली डाली में,
बसंत की पवन मतवाली में।
वह कभी राम तो कभी शाम,
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।।०।।

ऐसे गुरु के चरणों में,
क्यों न मन प्राण निवार दूँ।
श्रद्धा और सबूरी जिसके मन में,
'रोशन' होके जीवन सँवार दूँ।
वह कभी राम तो कभी शाम,
पैगाम श्रद्धा का भक्ति में।।०।।

ꣻ



साई

साई तेरो नाम लेकर मुक्त हो जाऊँ,
तर जाऊँ भवसागर पार।
साई चरणों की धूल लेकर मुक्त हो जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।० ।।

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजा,
तेरे आंगन में सब है सांझा।
साई द्वार की दृष्टि पाकर तृप्त हो जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।० ।।

राम तू, कृष्ण तू, अल्लाह तूं,
जिस का न कोई उसका मौला तूं।
साई धाम की झलक पाकर फिर तरस जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।० ।।

गिन लूँ कुकर्म कि साँसें गिन लूँ,
कर्म हीन दु:खों से पीडित हूँ।
साई कृपा इक बार पाकर संतुष्ट हो जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।० ।।

मन में खोट तन में कोढ़,
गम अज्ञान के लाखों करोड़।
साईं पथ का उबटन पाकर दर्द भूल जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।०।।

चित्त का दर्पण मैला कुचैला,
राक्षस रावण विचार हठीला।
राम राम का अनुग्रह पा वासना सुधारुँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।०।।

काशी, मथुरा, शिर्डी, वृन्दावन,
हर घर में तू हर हर शिव निरंजन।
साईं साईं पुकांरू भक्त बन जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।०।।

सजदे हज़ार किये बारगाह में आपके,
होके मसरूर भक्ति में आपके।
साईं नाम का जाम पीकर मस्त हो जाऊँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।०।।

जिस घर में प्रभु पूजा तेरी,
'रोशन' सारी अँधियारी होगी।
साईं चरणों में माथा टेक कर कर्म सुधारुँ।।
तर जाऊँ भवसागर पार।।०।।

साई जाम

राम साई श्याम साई, साई साई प्रणाम साई।
श्याम साई राम साई, साई साई प्रणाम साई।।

आपके पावन चरणों में है, निर्मल झील का अमृत जल,
अनुपम झरनों में है, निर्मल झील का अमृत जल।
लाख दुःखों की दवा साई, साई साई प्रणाम साई।।

द्वारिका माई के साई नन्दन, बंधन आप से श्रद्धा का,
दरबार आपका प्रेम वृन्दावन, बंधन आप से श्रद्धा का।
उज्ज्वल धाम सुबह ओ–शाम साई, साई साई प्रणाम साई।।

जो भी आया शरण तुम्हारे, बिगड़े काज सुधर गये सारे,
सच्चे पीर की दरगाह के द्वारे, बिगड़े काज सुधर गये सारे।
व्याकुल मन का आराम साई, साई साई प्रणाम साई।।

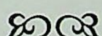


आपके जाप की मीठी कूक, तड़पत मनकी मिटाये हूक,
जन्म जन्म की अमिट भूख, तड़पत मनकी मिटाये हूक।
हर शब्द हरि पैगाम साईं, साईं साईं प्रणाम साईं।।

हीरे मोती किस काम के मेरे, गाँठ लिये हैं मंत्र तेरे,
शिर्डी के संत मैंने शाम सवेरे, गाँठ लिये हैं मंत्र तेरे।
तेरो नाम सच्चा इनाम साईं, साईं साईं प्रणाम साईं।।

अपनी भक्ति में भक्तों को रंग दे, अपनी प्रीत का खज़ाना भर दे,
मंगलमय हो ऐसा वर दे, अपनी प्रीत का खज़ाना भर दे।
सिद्ध कर दे सब काम साईं, साईं साईं प्रणाम साईं।।

मदिरा ऐसी पिला दे साईं, दाएँ—बाएँ दिखे बस साईं,
ज़र्रा—ज़र्रा हो 'रोशन' साईं, दाएँ—बाएँ दिखे बस साईं।
साईं जाम पिला दे साईं, साईं साईं प्रणाम साईं।।



साई लग्न

तेरी सूरत मन में समाई,
तोसे लगन लग गई साईं।
बाबा यह कैसी लीला रचाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।

चाँद से मुख से सूर्य का तेज,
पावन कदमों में इंद्र—धनुषी सेज।
साईं चरणों की मैंने आस लगाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।

जिस ओर देखूँ तुझे ही देखूँ,
देखों राम तो कभी कृष्ण देखूँ।
प्रभु जी यह कैसी प्रीत जगाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।

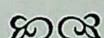
सजदे में तेरे ज्ञानी ध्यानी,
प्रेम का दरस तेरा नूरानी।
झूठे बंधन से मांगे रिहाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।

ये रिश्ते—नाते पानी की रवानी,
न बचपन बुढापा ना रहे जवानी।
यह जीवन सारा अजब खुदाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।

ईद भी तेरी होली तेरी,
काशी शिर्डी मथुरा भी तेरी।
तुझ पे ठाकुर जाऊँ मैं वारी,
तोसे लगन लग गई साईं।।

युगों युगों से प्यासे होंठ,
भक्ति से पिला प्रेम के घूँट।
आपकी रहमत का जग शैदायी,
तोसे लगन लग गई साईं।।

'रोशन' कर दे लौ दीपक की,
आपके होते बुझ न जाए।
तेरे नाम की मैंने शमा जलाई,
तोसे लगन लग गई साईं।।



ठाकुर

साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।
साईं चरणों की आस लगी रे,
आस लगी रे आस लगी रे।।

ठाकुर मेरे शीतल चन्दन,
महके त्रिभुवन होके पावन,
साईं दरबार की सुगंध महकी रे,
सुगंध महकी रे, सुगंध महकी रे।
साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

ठाकुर मेरे बसे चिंतन में,
तन में मन में बसे कण–कण में,
साईं–साईं रटने की चाह जगी रे,
चाह जगी रे चाह जगी रे।
साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

ठाकुर मेरे राम की सूरत,
खूबसूरत सी कृष्ण की मूरत,
साईं आंगन की राह हरी रे,
राह हरी रे, राह हरी रे।
साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

ठाकुर मेरे दिल की धड़कन,
प्रेम की छन–छन तरंग सम्पूर्ण,
साई पूजन की थाह बड़ी रे,
थाह बड़ी थाह बड़ी रे।
साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

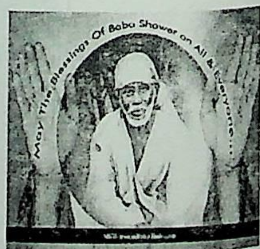
ठाकुर मेरे निर्मल सोहन,
मोहनी चितवन राधा के मोहन,
साई गुण–गान की महफिल सजी रे,
महफिल सजी रे, महफिल सजी रे।
साईं दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

ठाकुर मेरे ओम् की गुंनजन,
अलख निरंजन सुलक्षण सुदर्शन,
साई सत् संग की सरगम बजी रे,
सरगम बजी रे, सरगम बजी रे।
साई दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

ठाकुर मेरे अलौकिक विभूषण,
'रोशन' होवे सारा जीवन,
साई भगवन की धूम मची रे,
धूम मची रे, धूम मची रे।
साई दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।।

साई दर्शन की प्यास लगी रे,
प्यास लगी रे प्यास लगी रे।
साई दर्शन की आस लगी रे,
प्यास लगी रे आस लगी रे।।

ഇ൬



प्रेम की भेंट

शरण आया मैं चरणन में, सांझ सवेरे दर्शन में।
प्रेम की भेंट लेके नैनन में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

झोली मेरी खाली—खाली, द्वार पे आया तेरे सवाली।
कर दूँ क्या अर्पण में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

प्रेम का रस प्याली में, प्रीत का व्यंजन थाली में।
खिला—पिला के पूजन में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

भक्त की पुकार आँसू में, कण—कण में उसकी साँसों में।
तेरा ही नाम हर धड़कन में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

छल कपट से भरी पडी, मानव की द्वेष कड़ी।
क्या क्या करूँ वर्णन मैं, सांझ सवेरे दर्शन में।।

हेरा—फेरी रीत ही जग की, काली—करनी बुरे—संग की।
जो है सो मन—दर्पण में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

तू राम कृष्ण सखा साईं, सुन लो प्रभु मेरी दुहाई।
रंग श्रद्धा का भर दो तन—मन में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

ज्ञान—ध्यान की जोत जला कर, 'रोशन' तेज उस में मिला कर।
प्रज्वलित हो मेरे कण—कण में, सांझ सवेरे दर्शन में।।

हाज़री

दूर से आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।
इक शमा जलाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

तेरी बारगाह में, हैं हज़ारों सजदे में।
सर झुका के आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

कुछ तो आँसू लिये, कुछ रोये कुछ होंठ सिले।
कुछ सुनाने आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

तेरे सिवा कोई और नहीं, कोई सनम हमदम नहीं।
फैला के दामन आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

ढूंढने गुज़र गई, ढह गई मासूम जान।
मिलन की आस लगाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

दे दूँ क्या बादशाह, भेंट तुझ को शहनशाह।
दिल हथेली पे लाये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

क्यों हो चुप रे सनम, हम पे कर दो कुछ करम।
हम मनाने आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

आप ही की शान में, आन—बान और ईमान में।
ले के मुरादें आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।

'रोशन' सी महफ़िल में, हैं सैंकडों मयकदा।
पीने जाम आये हैं, हज़ूर के हज़ूर में।।



साई सुमरण

साई भजन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।
साई चिन्तन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।।

वह ही सारे कष्ट निवारे, वह ही भवसर पार लगाए।
साई सुमरण कर, तन मन अर्पण साई चरणन।।

वह ही राम वही कृष्ण हमारे,
भक्तों के वह प्रेम—दुलारे।
साई पूजन कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।।

भस्म भभूती, वह राख दरबार की,
दुआ बारगाह की वही दवा दर्द की।
साई जाग्रण कर, तन—मन अर्पण साई चरणन।।

उसके दर पे जो आये सवाली,
लौट के जाये न हाथ वह खाली।
साई दर्शन कर, तन–मन अर्पण साई चरणन।।

जिसके माथे नाम अल्लाह हो,
मन में राम होठों पे कृष्ण हो।
साई कीर्त्तन कर, तन मन अर्पण साई चरणन।।

भूले–बिसरे भूखे–प्यासे,
दर पे तेरे नत मस्तक हैं सारे।
साई साई कर, तन–मन अर्पण साई चरणन।।

काली रैन में फैलें उजाले,
'रोशन' करदे अज्ञान के काले।
साई गुण–गान कर, तन–मन अर्पण साई चरणन।।

तन–मन अर्पण साई चरणन, साई भजन कर।
साई चिन्तन कर, तन मन अर्पण साई चरणन।।



सर खम

सीस झुकाये पलकें बिछाये चरणों में,
आस लगाये, प्यास बुझाने चरणों में।
ओम् साईं, ओम् साईं, ओम् साईं ओम्।।

द्वारे तेरे आये हम, लाखों ग़म आँखें पुरनम,
तुझको रिझाने तुझको मनाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साईं, ओम् साईं, ओम् साईं ओम्।।० ।।

क्या—कहूँ, क्या ना कहूँ, तीखे सितम कितने सहूँ,
दिल के फसाने तुझे सुनाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साईं, ओम् साईं, ओम् साईं ओम्।।० ।।

झूठे बन्धन तोड़ के सारे, तेरे सहारे थके—हारे,
क्या क्या बतलायें दिल संभलाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साईं, ओम् साईं, ओम् साईं ओम्।।० ।।

दिल में छिपा के दर्द के छाले, पाले हैं ज़ख्म हज़ारों,
दर–दर के सताये मुरझे–मुरझाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्।।०।।

जल में तू थल में तू, राम भी तू कृष्ण भी तूं
आंगन महकाने फूल बिखराने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्।।०।।

नज़र में तुझको प्राण करदूँ दो, जो दिया सारा वारदूँ,
छत्र चढ़ाने तुझे सजाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्।।०।।

बन के शमा तेरी बारगाह में, 'रोशन' होके महफ़िल में,
दामन फैलाने दीप जलाने चरणों में।
आस लगाये प्यास बुझाने चरणों में।।
ओम् साई, ओम् साई, ओम् साई ओम्।।०।।

ဢလ

साईं दरबार

तेरे आंगन में हम तेरे आंगन में हम।
श्रद्धा के फूल लेके आंगन में हम।
तेरे प्रांगण में हम, तेरे प्रांगण में हम।
नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम।।

दूर से आये तेरे सवाली।
खाली हाथ न जायें हम।।
तेरे दामन में हम, तेरे दामन में हम।
नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम।।

अर्ज़ हमारी सुन लो शहनशाह।
बादशाह तू सारे जग का है।।
तेरे आराधन हैं हम, तेरे आराधन हैं हम।
नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम।।

भूखे–प्यासे थके–हारे, तेरे द्वारे आये हम।
तेरे वृन्दावन में हम, तेरे वृन्दावन में हम।।
नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम।।

नाम मैं तेरे कितने गिन लूँ।
मान लूँ तुझको कृष्ण और राम।।
तेरे चरणन में हम, तेरे चरणन में हम।
नंगे पाँव साईं प्रांगण में हम।।

पास न आवे दु:ख और संकट।
निकट न आवे कोई उलझन।।
तेरे पूजन में हम, तेरे पूजन में हम।
नंगे पाँव साई प्रांगण में हम।।

दूनी रमा के क्यों ना मैं बैठूँ।
बैठूँ ध्यान में सुबह और शाम।।
तेरे चिंतन में हम, तेरे चिंतन में हम।
नंगे पाँव साई प्रांगण में हम।।

गूंज है तेरे नाम की साई।
दाएँ बाएँ तू ही तू।।
तेरे जागरण में हम, तेरे जागरण में हम।
नंगे पाँव साई प्रांगण में हम।।

अज्ञान के काले प्रभु जी मिटा ले।
करदे उजाले 'रोशन' तू।।
तेरे भक्त भक्त हैं हम, तेरे भक्त हैं हम।
नंगे पाँव साई प्रांगण में हम।।

तेरे आंगन में हम, तेरे आंगन में हम।
श्रद्धा के फूल लेके आंगन में हम।।
तेरे प्रांगण में हम, तेरे प्रांगण में हम।
नंगे पाँव साई प्रांगण में हम।।

एक ईश्वर

ऐसा पैगम्बर भेज धरती पर,
नाम जिसका सब से पावन।
ईश्वर अल्लाह जिसके होठों पर,
दरस जिसका मन—भावन।।

शैखजी कहते हैं अल्लाह मस्जिद में,
दैरो—हरम में उसका नूर।
ब्राह्मण कहता है भगवान मन्दिर में,
जल—थल में उसी का ज़हूर।।

किसी ने रंग दी मांग लाली से,
किसी ने माथे पे दे दिया दाग़।
किसी ने भक्ति के अनुराग से,
किसी ने नश्वर को किया त्याग।।

धर्म के नाते धारा अमृत की,
बहती क्या तेरे आंगन से।
यह बारगाह केवल श्रद्धा की,
जो मिले भक्तों को स्मरण से।।

बट चुका है मानुष दीन—धर्म पे,
है बिखरा—बिखरा सा खून।
मदहोश है झूठे भरम से,
सर पे अज्ञान का जनून।।

सजदे में सभी हैं आसमान के नीचे,
मांगें अपनी अपनी ख़ैर।
सर झुकाये हैं अखियाँ नीचे,
पासबाँ के सामने अपना कौन गैर।।

मन राम हो कृष्ण ही मन,
मन ही अल्लाह ईश्वर मन।
प्रेम जोत से 'रोशन' हो मन,
कण–कण में प्रेम की हो अगन।।

साई रहमत

तेरे द्वारे तेरे प्यारे,
शाम–सवेरे साईं साईं पुकारे।
बिन तेरे प्रभु जी कौन दुलारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

सीस झुका के है दर पे आये,
तेरे चिंतन में सुध बिसराये।
आपकी रहमत से हों वारे–न्यारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

तुझ बिन कौन करे सुनवाई,
प्रिय भक्तों की सुन लो दुहाई।
मन से पीड़ित दीन दुखियारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

भँवर में जीवन खाये हिचकोले,
डूब न जायें हौले–हौले।
नैया हमारी लगादे किनारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

जीवन–पथ पर काँटे बिछे हैं,
दहकते अंगारे झुलस रहे हैं।
थके हारे मुसाफिर बेचारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

यूँ ही जन्म व्यर्थ न होवे,
सोवे न आलस में कुंभकर्ण।
अनमोल पूँजी ऐसे न हारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

तेरे नाम की जग में शोहरत,
कृष्ण की मूरत में राम की सीरत।
मात–पिता हो आप हमारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

इक ज़र्रा धूल में पड़ा हूँ,
धुँए के गुब्बार से लड़खड़ा रहा हूँ।
'रोशन' सी लौ अब तेरे सहारे,
शाम सवेरे साईं साईं पुकारे।।

सत गुरु साई

सत गुरु साई राम हमारे, जग के दुलारे काज संवारे।
एक अगोचर सब से न्यारे, जग के दुलारे काज संवारे।।

कृष्ण की बंसी की तान तुम हो,
राम–बाण की पहचान तुम हो।
सृष्टि के प्रीतम प्यारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

प्रेम का तेज टपके मुख से,
सब्र का प्याला छलके नैनों से।
इक–इक ज़र्रे को यूँ ही निहारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

तेरे पावन पैर जो पड़ गये,
मिट गये दुःख दर्द बिना दवा लिये।
थाम लिये जिस ने चरण तुम्हारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

काशी मथुरा और वृन्दावन,
तेरे धाम पे तीर्थ सम्पूर्ण।
जायें तो मिट जायें कष्ट सारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

भक्ति के जाम पिला भर–भर के,
प्रेम–सागर में डूब जायें अब के।
पलकें बिछाये हैं दीन–दुखियारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

वासना का ढेर इक आतश–फ़िशान है,
कुकर्म जीवन का धुंधला निशान है।
हम सब अज्ञानी तृष्णा के मारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

ग्रहण के साये ठाकुर मिटा दे,
अंधेरी रातों में चाँदनी निखार दे।
भक्तों को दिखा दे 'रोशन' नज़ारे,
जग के दुलारे काज संवारे।।

साईं—आस

कब से बैठा हूँ आस लगाये,
हे दीन—बंधु दरस दिखा दे।
आँखों में आँसू लिये दामन फैलाये,
हे दीन—बंधु दरस दिखा दे।।

यूँ ही जीवन व्यर्थ बिताया,
गंवाया पल—पल इधर—उधर।
शरण तेरे चरणों में सीस झुकाये,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

काम क्रोध के प्याले नशीले,
ज़हरीले घूँट अज्ञान के।
तुझ बिन प्रभुजी कौन सिखलाये,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

कौरव मन के वासना से लथ—पथ,
मत पापों को अपनाये।
साईं रहमत ही पथ निहारे,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

कर दे करम एक ठाकुर मुझ पर,
शामो–सहर धरूँ बस तेरा ध्यान।
तेरे ही नाम से जन्म सफल हो जाये,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

थका–हारा आया तेरे दर पर,
कहर कर्मों का मिटाने।
तू ही राम तू ही कृष्ण कहलाये,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

ठाठे मारे यह जीवन–सागर,
गागर में डोलू लहरों पै।
बन के माही पार उतारे,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

काले अंधियारे लोभ और मोह के,
रह रह के करे व्याकुल मुझे।
'रोशन' किरण से तन–मन नहलाये,
हे दीन बंधु दरस दिखा दे।।

सवाली

शरण तेरे चरणों में आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।
संवारने को आया मैं अपनी बेहाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

कुछ देर तो जी लूँ भुला के ग़म,
पुर–नम आहों के रिसते ज़ख्म।
नैनों में नीर लिये आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

मैं और मेरी तनहाइयाँ खामोश हैं,
खामोश हर उमंग सर्दओ–बेहोश है।
दर पे आस लिये आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

अकेला सफ़र में चला जा रहा हूँ,
ढूंढता रहा हूँ मंज़िल के निशान।
तेरी चौखट पे आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

धूल में लथ–पथ थका–हारा,
मारा–मारा जैसे आवारा।
झोली फैला के आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

उम्र झुरियों में लड़खड़ाते कदम हैं,
बे–बसी में हमदम न कोई हमकदम है।
मुरादें ले के आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।

अंधेरों में गुम–सुम इक और नाम है,
'रोशन' उजाले में मायूस शाम है।
गुमनाम दहर से आया सवाली,
खाली हाथ न लौटाना।।





खोज

कितने ही सजदे किये, तेरी बारगाह में।
कितने जलाये दीये, तेरी बारगाह में।।

तेरी दरगाह पे कितनी बार सरखम रहे।
फिर भी बे–इतमीनान रहे, तेरी बारगाह में।।

झोली तो झोली दामन भी फैला चुके।
फिर भी खाली हाथ रहे, तेरी बारगाह में।।

कहते थे सभी इकबार ईमान तो ला।
फिर भी बेईमान रहे, तेरी बारगाह में।।

वह कौन जिन की पूरी होती हैं मुरादें दिल की।
फिर भी नामुराद रहे, तेरी बारगाह में।।

कसम तेरी किसी और को माना नहीं पूजा नहीं।
फिर भी नादार रहे, तेरी बारगाह में।।

कोशिश तो हज़ार की इक झलक मिलने को।
फिर भी मायूस रहे, तेरी बारगाह में।।

इक उम्र गुज़र गयी तेरी खोज में ऐ साईं।
फिर भी हम आते रहे, तेरी बारगाह में।।

कुछ देर शमा बन के 'रोशन' हुये जलते–जलते।
फिर भी अंधेरों में रहे, तेरी बारगाह में।।



मोहे अभिलाषा

आपके चरणों में, सज के आई हीरों के अंबार।
आपके शरण में, पीने आई अमृत–धार।।

आपके नाम की अजर–अमर सुगंध,
मंद–मंद पवन स्वर्ग की।
आपके शरण में सज के आई पावन द्वार,
पीने आई अमृत–धार।।

सुबह की लाली छू कर पथ को,
नत मस्तक होकर भास्कर।
आपके शरण में पहनाने आई भक्ति का हार,
पीने आई अमृत–धार।।

आपका प्रेम सब से अनमोल,
तोल—तोल के बे मोल।
आपके शरण में करने आई आपका दीदार,
पीने आई अमृत—धार।।

मैं तो बाँवरी प्रेम धुन में,
गुन—गुनाती आप ही का नाम।
आपके शरण में लेने आती प्रेम फुँहार,
पीने आई अमृत—धार।।

आपका नाम हज़ारों में चुनके,
त्याग के आये लोभ और मोह।
आपके शरण में सुनाने आई दुखड़े हज़ार,
पीने आई अमृत—धार।।

आपके दरस की मोहे अभिलाषा,
आशा आपकी सदा 'रोशन'।
आपके शरण में दौड़ी आई होके बेकरार,
पीने आई अमृत—धार।।

साईं प्रकाश

साईं पावन चरणों में बैठ कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।
गुरु चरणों का अनुग्रह पाकर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

झुलसती पीड़ दहकता पाप,
संताप कर्मों का उगले अंगारे।
साईं द्वार की धूल मल कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

लोभ मोह की तपती प्यास,
उदास कर के जगाये त्रास।
साईं बारगाह का अमृत पी कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

दीन–दुःखी फिरूँ मारा–मारा,
थका–हारा बे सहारा मैं।
साईं–रहमत का इनाम लेकर,
क्यों ना में जीवन संवार लूँ।।

कितने ही सजदे किये मसजिद में,
मंदर में टेक कर झुकाया सर।
साईं नाम का जाप जप कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

रफीक तू शफीक तू गरीब—नवाज़,
साज़ कृष्ण का मीरा की आवाज़।
साई शाम की अराधन कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

जो भीख के मांगे और बांटे सब में,
उस में समाया दया का सागर।
साई—भक्ति का प्रसाद खा कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

आप कृपालु आप करुणा—कर,
समन्दर आप सब्र का।
साई राम के गुण गा कर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

अंधी अंधियारी वासना की गलियाँ,
कलियाँ तृष्णा की काँटों भरी।
साई प्रकाश 'रोशन' होकर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

साई पावन चरणों में बैठकर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।
गुरु चरणों का अनुग्रह पाकर,
क्यों ना मैं जीवन संवार लूँ।।

ജ്ഞ

मंगल—वर्षा

मंगल वर्षा कर दे साईं,
साईं नाम की हरियाली हो।
सुख की बेला हो दाएँ—बाएँ,
साईं नाम की हरियाली हो।।

इंद्र—धनुष आपके संग,
अंग—अंग में बिखराये रंग।
रहमत की फुंहारें बरसा दो साईं,
साईं नाम की हरियाली हो।।

शबनम के सीने में प्रेम की बूंदें,
अखियाँ मूंदे ईर्ष्या की ओस।
दुःख के बादल हटा दो साईं,
साईं नाम की हरियाली हो।।

प्रेम की बरखा बरसे दिन—रैन,
नैन करें तेरा इंतिज़ार।
अपनी लगन जगादो साईं,
साईं नाम की हरियाली हो।।

आप ही आप सुबह की लाली में,
बसंत की मतवाली हवा में आप।
सुगंध विश्वास की महका दो साईं,
साईं नाम की हरियाली हो।।

शिव के शंख की गूँज में आप,
आप निरंजन दु:ख– भंजन।
आप ही राम और कृष्ण हो साई,
साई नाम की हरियाली हो।।

मोहन की मुरली के अनन्त सुरों में,
मीठे अधरों के मधुर बोल।
गीता का उपदेश सुना दो साई,
साई नाम की हरियाली हो।।

शंकर की जटा में आप चंद्रमा,
रमा के चरणों का खिला कंवल।
प्रेम की गंगा बहा दो साई,
साई नाम की हरियाली हो।।

ज्ञान ध्यान की 'रोशन' किरण से,
ग्रहण की कालिख मिटा दो।
अज्ञान पथ को निंखारो साई,
साई नाम की हरियाली हो।।

ꣻ

साईं दीदार

मुझे सपने में साईं दीदार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।
नींद हो ऐसी साईं साकार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

मैं तो मदहोश आपकी मस्ती में,
कण—कण में आपका खुमार।
भक्ति का प्याला सरशार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

बीता कल और आज इंतिज़ार में,
बे—करार मैं आपके बिना।
जलवा दिखाने का इक़रार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

हे दया—सागर अर्ज़ सुन लो,
गिन लो मुझ को चरणों का दास।
सहरा में अनुग्रह की फुहार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

मुरली के सीने में सात छेद,
भेद सरगम के सुरों में।
साईं—मंत्र की झंकार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

साईं ही राम साईं ही श्याम,
साईं नाम गूँजे सुबहओ–शाम।
हर ज़र्रा साईं ओमकार हो जाय,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

कर्म का मारा थका हारा,
सारा जीवन इक डूबता तारा।
विनति कृपा की स्वीकार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

वरदान में ठाकुर दे ज्ञान और ध्यान,
अज्ञान पथ को मिटा दे।
अंधियारा जीवन 'रोशन हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

मुझे सपने में साईं दीदार हो जाये,
साईं में साईं दरबार नज़र आ जाये।
नींद हो ऐसी साईं सांकार हो जाये,
साईं ही साईं दरबार नज़र आ जाये।।

ജാങ്ങ

शाहे शहनशाह

शाहों के शाहे शहनशाह,
बादशाह दो—जहान के तुम।
अर्श—ओ—फर्श के शाहे शहनशाह,
बादशाह दो—जहान के तुम।।

फीका लागे आफताबे दरखशाँ,
गौहरे—बदखशाँ तारों का कहकशाँ।
साई चरणों की मोहे अभिलाषा,
बादशाह दो—जहान के तुम।।

मन्दिर मस्जिद में शैख व ब्राह्मण लूटे,
टूटे फूटे दावे झूठे।
साई बारगाह की जागे आशा,
बादशाह दो—जहान के तुम।।

राम कृष्ण को एक आकार में,
साकार देखा आप में।
साई को शिव ने आप तराशा,
बादशाह दो—जहान के तुम।।

द्वारे–द्वारे परख लिये सारे,
आप अगोचर सब से न्यारे।
साईं मंत्र ही जग की भाषा,
बादशाह दो–जहान के तुम।।

ब्रज में श्याम अयोध्या में राम,
धाम शिर्डी का अनुपम।
साईं मिटाये भक्तों की निराशा,
बादशाह दो–जहान के तुम।।

मैं तो प्यासा आपकी भक्ति में,
महकती सुगंध सबूरी की।
साईं महिमा प्रेम परिभाषा,
बादशाह दो–जहान के तुम।।

आपके नाम की 'रोशन' दमक,
चमक हज़ारों सूर्य की।
साईं नाम मिटाये अज्ञान की हताशा,
बादशाह दो–जहान के तुम।।

श्रद्धा और सबूरी

द्वारिका माई के हे संत साईं,
आपकी खुदाई का जग शैदाई।
आप ही राम आप कृष्ण साईं,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

आपके सदक़े हज़ार जान,
यह आस्तान मेरा दीन—ओ—ईमान।
न हिन्दू न मुसलमान, न ईसाई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

शाहूँ के शाह शाहे शहनशाह,
हर दिशा में आपकी गूंज।
दैरोहर्म में आपकी बादशाही।।
आपकी खुदाई का जग शैदाई।।

चौखट पर विभूति की सुगंध,
मंद—मंद महक बारगाह की।
दर्द—मंदों की सुन लो दुहाई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

जिस ने नाम लिया श्रद्धा से आपका,
संताप का अग्न शबनम होवे।
खिलेगी धूप जहाँ बदरा छाई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

आपके नाम पे मैं बलिहारी,
वारी जाऊँ कदमों में।
अर्श–ओ–फर्श पे आपकी पार साई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

लब पे आपके अल्लाह की अज़ान,
तान मुरली की सीने में।
कर दे करम हम पे या इलाही,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

सब्र का सागर मुठ्ठी में आपके,
शाप के विष को अमृत पिलाये।
वाह रे बाबा की 'रोशन' आशनाई,
आप की खुदाई का जग शैदाई।।

साईं बोल

साईं स्मरण से मधुर कर वाणी,
साईं बोल साईं, साईं बोल प्राणी।
शिर्डी के संत की अनमोल कहानी,
साईं बोल साईं, साईं बोल प्राणी।।

नंगे पाँव झोला हाथ में,
साथ में खज़ाना अनुग्रह का।
वह तो साधू सदाचारी जिसका न सानी,
साईं बोल साईं, साईं बोल प्राणी।।

सब्र का सागर बंद मुठ्ठी में,
मन में प्रेम का अमृत–कुंड।
बूंद–बूंद पिलाये ज्ञान का पानी,
साईं बोल साईं, साईं बोल प्राणी।।

न तख्त–ओ–ताज वह फिर भी बादशाह,
शहनशाह चारों दिशाओं का।
मस्तक पर सूर्य का प्रचंड नूरानी,
साईं बोल साईं, साईं बोल प्राणी।।

फकीर कहे रुपय—पैसा गर्दे फ़ानी,
यह तो आनी जानी पानी की रवानी।
अनन्त भक्ति की इक अनुपम निशानी,
साई बोल साई, साई बोल प्राणी।।

निष्ठा आस्था अनुराग के पासंग,
अंग—अंग में श्रद्धा की तरंग।
निष्काम प्रेम की अजर अमर जवानी,
साई बोल साई, साई बोल प्राणी।।

वासना तृष्णा अज्ञान के दो—राहे,
बाहें फैलाये लोभ और मोह।
माया छलावी यह तो हवा तूफानी,
साई बोल साई, साई बोल प्राणी।।

साई दर पे जो भी आये,
जाये न खाली हाथ वह।
वह 'रोशन' योगेश्वर वो अपार दानी,
साई बोल साई, साई बोल प्राणी।।

साईं हरे

साईं हर हर साईं हरे, ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।
मन प्राण ध्यान धरे, ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

यह पावन अक्षर भक्ति की पहचान,
मीठी तान श्रद्धा की।
सुरीली गूंज साँझ–सवेरे,
ज़र्रे–ज़र्रे में साईं नाम।।

कलियुग के स्वामी सुखदाई,
द्वारिका माई के संत साईं।
अनुपम जाप से जगत निखरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

अनुग्रह बूंदे प्रेम–पावस की,
हवस की अगन मिटाये।
ज्ञान–वर्षा की शबनम बिखरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

आप भूखे पर भक्तों को खिलाये,
पिलाये जाम, अनुरागी।
तोड़ के लोभ और मोह के पहरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

फट्टे–पुराने में परख न प्राणी,
नूरानी सूरत की मूरत मस्तानी।
मन–दर्पण में पहचान चेहरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

जो प्रेम का आंचल वह सब्र का सागर,
शरण में जा कर चिंतन कर।
सहरा हो जायेंगे हरे भरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

राम और कृष्ण का अलौकिक रूप,
धूप सुनहरी 'रोशन' सी।
मिटाये अंधेरे घने गहरे,
ज़र्रे ज़र्रे में साईं नाम।।

ॐ

साईं चरणों में

साईं मैं तो बलिहारी, बलिहारी, वारी मैं चरणों पे।
साईं चौखट पे, मैं बलिहारी, बलिहारी, वारी मैं चरणों पे।।

मन्दिर–मन्दिर द्वारे द्वारे, सारे तीर्थ घूमे मारे मारे।
अब आपकी बारगाह में दीन दुखयारी, वारी में चरणों पे।।

आपके ध्यान में हरे कृष्ण को, राम को आपके ज्ञान में।
मोहनी सूरत पे मैं दिल हारी, वारी में चरणों पे।।

गंगा युमना मथुरा काशी, साक्षी प्रेम और श्रद्धा के।
आपके नाम की में पुजारी, वारी में चरणों पे।।

फटे पुराने में नूरानी चेहरा, सेहरा खुरशीद की किरणों का।
पूजे आपको दुनिया सारी, वारी मैं चरणों पे।।

हिंदू मुस्लिम आपके दो नैना, गहना आपकी ज़ीनत का।
मुख–मंडल पे मुस्कान प्यारी, वारी मैं चरणों पे।।

मन में लब पे एक ही बोली, होली ईद प्रेम हमजोली।
आपकी खुदाई सब से न्यारी, वारी मैं चरणों पे।।

हे ठाकुर अर्ज़ सुन लो, कर लो 'रोशन' मेरे पथ को।
मैं भी तो बन लूँ जोगन तुम्हारी, वारी मैं चरणों पे।।

ꕥꕥ

संत साई राम

हरि हरि बोले जो सुबह–व–शाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।
मन में कृष्ण होठों पे राम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

द्वारिका माई में राम लौट आये,
भक्तों के रोम–रोम में कृष्ण समाये।
वाणी मीठी जिसका प्रेम निष्काम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

कर्म से संत जो धर्म से संत,
आदि प्रेम है प्रेम ही अन्त।
निर्मल शीतल जिसका धाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

भाव से शीतल कामना मंगल,
आचार–विचार धर्म का हर पल।
ईश्वर अल्लाह का जो दे पैग़ाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

प्रेम शब्द जिसके सत्य की संजीवनी,
चखे वह जाने योग कुंडलिनी।
दया कृपा का जो दे इनाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

जो प्याला पिये तेरे सत्–संग का,
लागे लगन उसे साईं अंग संग का।
हो जाये मुक्त वह पी के जाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

प्रसाद जो बांटे ज्ञान–ध्यान का,
निस्वार्थ सेवा त्याग साधना का।
साईं जिसका अनुपम नाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

सुन के ज्ञान मस्त हो जायें,
अनमोल बोल में सुध–बुध खो जायें।
मले युगों का सिद्ध परिणाम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

चित दर्पण में घोर अंधेरा,
'रोशन' होके कर दो सवेरा।
तड़पत मन को जो दे आराम,
उन श्री चरणों को मेरा प्रणाम।।

आपके शरण

आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर,
ध्यानेश्वर ज्ञानेश्वर आप ही आप।
आप करुणा–कर योगेश्वर, सर्वेश्वर,
ईश्वर जगदीश्वर आप ही आप।।

सत्–गुरु साईं नाथ भगवन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।
जगत गुरु शत शत करूँ नमन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

कर्म–धर्म की गर्दिश में,
मैं, मैं में खो गया उलझन में।
खोल दे गाँठ काट दे बन्धन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

सावन रंगीला ओस से लथ–पथ,
ऐहरावत बरसाये ओले पथ पे।
हर लो पाप–शाप हे दुःख भंजन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

तेरे दरस की कामना दिन रैन,
नैन तरसे आये न चैन।
पार उतारे बस तेरा चिंतन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

सुगंध पावन नाम की अजर अमर,
शाम—ओ—सहर महके चेतन।
नाम स्मरण से खिले मन—प्रांगण,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

कौन सा मन्दिर कौन सा आस्तां,
पासबाँ भक्तों का आप जैसा।
सुदर्शन सुलक्षण आप निरंजन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

क्यों न होलूँ आपका दीवाना,
परवाना आपकी बारगाह का।
मैं तेरे शरण करदूँ आराधन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

धुंधला धुंधला मन—दर्पण,
'रोशन' होके मिटा ले ग्रहण।
उज्ज्वल होके जैसे शीतल चन्दन,
अर्पण जीवन तेरे चरणन।।

जामे—मारिफ़त

जगत् गुरु की दहलीज़ पर, हज़ारों सर सजदे में।
ले के मुरादें आये दरपर, शाम—ओ—सहर अक़ीदे में।।

सर पे केसरी मलमल की
कंवल की रौनक जलाल पर।।
यह खुदा का बंदा कहते सभी।
मुश्के—नाफ़ा रवाँ जमाल पर।।

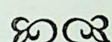
यह बादशाह सर से पाँव तक।
मस्तक पर रंगे—क़ोसे—क़ज़ा।।
हर सू हज़ूर की शीतल महक।
दस्तक दे रही है बारगाह की फ़िज़ा।।

बैठे हैं क़तार में अक़ीदतमंद।
अर्ज़मंद की लासानी रहमत को।।
ज़ख्मे पिल्हांलिये दर्दमंद।
मंद—मंद खुशबू मलने को।।

गूंज साईं नाथ आपकी।
शाम की तान खुशबुओं के पैग़ाम की।।
वह खनक जामे मारफत की।
छलकते जाम के मदमस्त कवाम की।।

आपके दामन के नीचे।
अखियाँ मीचे माया का मोर।।
आप आगे जग आपके पीछे।
चुपके खींचे कर्म की डोर।।

इक और करम कर दे भगवन।
पावन चरणों में रहने दे।।
अज्ञान के काले कर दे 'रोशन'।
धन प्रेम का भीख में दे।।



कृपालु निरंजन

मैं दर पे आपके साईं नाथ भगवन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।
दयालु कृपालु साईं निरंजन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

जेब से खाली तेरे दर पे,
सर पे लिये अज्ञान का बोझ।
तेरे द्वारे मैं निर्धन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

मैं लोभी राह को भूल गया,
सो गया दिन के उजाले में।

धुंधला—धुंधला मन—दर्पण,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

कर के भ्रमण तेरे शरण,
चिंतन करने को आया हूँ।
तेरे चरण और मेरा पूजन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

दरिद्र मन चित अभिमानी,
फ़ानी जग की अजब कहानी।
अल्हड़ अहंकार का कर ले दहन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

तेरा ही नाम हर दिशा में,
वर्षा में तू इंद्र—धनुष।
पावन सुहावन तेरा दर्शन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

जगत गुरु ध्यान धरो,
हरो कष्ट और संकट मेरे।
तुझ बिन कोई और न साधन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

आया मैं तेरे आंगन सवाली,
थाली अनुपम प्रेम की खिला।
शत—शत नमन 'रोशन' चरणन,
कर दूँ क्या मैं अर्पण।।

आरती

ओम् नमो भगवते साईं नाथाय, नारायणाय नमो नमः।
राम स्वरूपाय श्री कृष्णाय, नारायणाय नमो नमः।।

काशी मथुरा जिस आंगन में, प्रांगण में द्वारिका माई।
पावन धाम शिर्डी कहलाये, नारायणाय नमो नमः।।

इंद्र–धनुष के सात रंग, अंग–अंग रंग दे आपके।
सूर्य की किरणें तेज निखारे, नारायणाय नमो नमः।।

विनायक की लाली ललाट पर, सर पर केसरी रुमाल ओढ़ कर।
चंद्र–धर आपके मन में समाये, नारायणाय नमो नमः।।

नंगे पाँव और जोगी–चोला, झोला लिये भोला फकीर।
श्रद्धा का बादशाह भक्तों को निहारे, नारायणाय नमो नमः।।

सब्र का सागर जिसके मन में, कण कण में फूटे शीतल अमृत।
अनुग्रह का प्याला प्रेम से पिलाये, नारायणाय नमो नमः।।

पंच–तत्व में आपकी गूंज, अरूज़ पे आप विराजमान।
चारों दिशा में साईं नज़र आये, नारायणाय नमो नमः।।

मै आपकी आराधना में मदहोश साईं चित में समायी 'रोशन' मूरत।
साईं–सुगंध रोम–रोम महकाये, नारायणाय नमो नमः।।

भगवान साई नाथ

जगत–गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।
अपनी बारगाह में बुला कर, जाम भक्ति का पिला लो।।

मैं तो धूल में, फूल नरगिस का मुरझा पड़ा।
पाप शाप मिटा कर, पावन प्रेम में संवार लो।।
जगत–गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

भक्त चहक रहे हैं, गा रहे हैं गुण आपके।
प्रेम की महक फैला कर, स्मरण में मदहोश कर लो।।
जगत–गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

मोहे लागे धुन साई नाथ की, दो–जहाँ के हज़ूर की।
हे बादशाह अनुग्रह कर, अपने चरणों में बिठा लो।।
जगत–गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

छोड़ कर गये मेरे अपने, सपने ही सपने आँखों में।
अपनी भक्ति का भक्त बना कर, दुलार कर निहार लो।।
जगत–गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

अंधेरों में भटका हुआ हूँ, ढूंढ रहा हूँ उज्ज्वल निशान।
'रोशन' किरण दिखा कर, मेरे पथ को निखार लो।।
जगत—गुरु रक्षा कर, थाम कर पार उतार लो।०।

ꕥ

साईं दामन में

मैं तो हर साँस में, लें रहा हूँ आप का नाम।
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम।।

गर्द—ओ—गुबार में लथ—पथ, बहुत जी चुका हूँ मैं।
अब के अपने चरणों में, दे दे भक्ति का इनाम।।
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम।०।

आपके तेज से, उज्ज्वल है फर्श—ओ—अर्श।
आप ज़र्रे—ज़र्रे में, कभी राम तो कभी श्याम।।
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम।०।

सत गुरु आप जगत—गुरु, शुरू से आख़िर तक आप ही आप।
आने दे शरण में, पीने दे भक्ति का जाम।।
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह—ओ—शाम।०।

रोशन ही रोशन आपका जमाल, जलाल मिहर–ओ–क़मर का।
हैं हज़ारों सजदे में, आचार–विचार से करें प्रणाम।।
सर झुका है दामन में, बैठा हूँ सुबह–ओ–शाम।०।

ꙮ

साई महाराज

श्री साई के पावन द्वार पर, मुरादें पूरी हो जायें।
खाली दामन आयें लेकर, भर–भर झोली लौट आयें।।

साई महाराज के चरणों में, सीस झुकाऊँ बार–बार।
साई नाथ के चिंतन में, सीस झुकाऊँ बार–बार।।

दुःख ही दुःख क्यों आपके होते, सोते जागते क्यों हम रोते।
साई महाराज के शरण में, सीस झुकाऊँ बार–बार।।

तेरे द्वारे आये हम, मिटाने आये मन का भ्रम।
साई महाराज के आंगन में, सीस झुकाऊँ बार–बार।।

राम कृष्ण को देखूँ तुझ में, तुझ में ही देखूँ शिव की मूरत।
साई महाराज के अवगाहन में, सीस झुकाऊँ बार–बार।।

नैन बिछाये आस लगाये, पंथ निहारे प्रेम के मारे।
साईं महाराज के अभिनन्दन में, सीस झुकाऊँ बार—बार।।

व्याकुल मन में ठाठें मारे, खारे लोभ की अंधी लहरें।
साईं महाराज के आराधन में, सीस झुकाऊँ बार—बार।।

काम क्रोध का मन में पहरा, काला कौआ द्वेष—भरा।
साईं महाराज के दामन में, सीस झुकाऊँ बार—बार।।

ऐसा कर दे भगवन अबके, मैले दर्पण को 'रोशन' कर दे।
साईं महाराज के स्मरण में, सीस झुकाऊँ बार—बार।।



पूजा का अवधान

हमें ज्ञान दे, ज्ञान दे,
ज्ञान दे रे, साईं ज्ञान दे।
हम आपके चरणों के नीचे,
हमरी ओर ध्यान दे।।

भूखे, प्यासे, थके, हारे,
आपके दूलारे शिरडी के द्वारे।

हम आपके चरणों के नीचे,
भक्ती का वर्दान दे।।

मय्खाना ऐसा आप साकी हों,
आप हों महफिल में ओर आप के दिवाने हों।
हम आपके चरणों के नीचे,
श्रद्धा का जाम धान दे।।

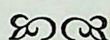
न ललचाती लोभ की सूनहरी छाया,
न माया का चम्कता जाल।
हम आपके चरणों के नीचे,
दया का अनूपाण दे।।

न हीरे मोती, न महल दुमहले,
न रुपहले कोष की छन छन।
हम आपके चरणों के नीचे,
आस्था का अस्मान दे।।

टेक लिया माथा हर दर पर,
माथे पर खोद के कैसरी तिलक।
हम आपके चरणों के नीचे,
पूजा का अवधाण दे।।

नश्वर काया पै पाप के ओले,
शोले बन कर जूलस रहें।
हम आपके चरणों के नीचे,
कृपा का राम भाण दे।।

प्रेम की लय में 'रोशन' हो जाऊँ,
त्रप्त हो जाऊँ मुक्त होकर।
हम आपके चरणों के नीचे,
विश्वास की अज़ाँ दे।।



सजदे में

साहिबा में तेरी बारगाह में, शीश जूका के चरणों में।
तेरी चौखट पै सजदे में, शीश जूका के चरणों में।।

हो गई बाँवरी में तो बलहारी, वारी में ऐसी मूर्त पै।
शाम सवेरे तेरे ध्यान में, शीश जूका के चरणों में।।

साधू संत और अलख जोगी, सब रोगी लोभ और माया के।
द्वारिका माई के आंगन में, शीश जूका के चरणों में।।

पूजा की विधी में न जानू, पहचाँनू ना में वेद्य पुरान।
बस तेरे नाम के अवधाण में, शीश जूका के चरणों में।।

पंड़ित कहें में अज्ञानी, अनजानी पथ की पथिका।
में तो आप के कृपा के अनुपाण में, शीश जूका के चरणों में।।

तेरा ही मंत्र पार उतारे, वारे न्यारे होंगे सारे।
झोली फहला के असवन में, शीश जूका के चरणों में।।

अवघुन मेरे भस्म कर दे, रंग दे मुझे अपने ही रंग में।
आप की शान की प्रार्थाना में, शीश जूका के चरणों में।।

अब 'रोशन' कर दे अपनी रहमत, सत चित आनंद बरसा दे।
कस्म से कुछ और न मांगों में, शीश जूका के चरणों में।।

ങ്ങ



SAI CHARNU MEIN

(A Devotional Poetry)

By



डॉ 'रोशन' सराफ

''डॉ रोशन सराफ'' के क़लम का एक और रंग जो रंग साई बाबा की भक्ति और श्रद्धा की सियाही से रंगा हुवा है। डॉ रोशन सराफ एक बहुमुखी कवि हैं। जिस ने कश्मीरी, अंग्रेज़ी और अब हिन्दी या यूँकहें की हिन्दोस्तानी में एक बेंट ''साई चरणों में'' साई बाबा के भक्तूं को साईमय कर देता है। डॉ साहिब ने साई भजनू को संगीत की लय में सुरू की झंकार में पिरोया है। में मन की गहरायूँ से भगवान जी से प्रार्थना करता हूँ कि डॉ रोशन सराफ को अपने अनुग्रह के प्रसाद्ध से सराबोर करें !

प्रो. ओमकार नाथ च्रंगू
पटोली, जम्मू।

Nav Durga Printers Patoli Chowk, Jammu # 94191-24691